श्रीजगन्नाथ पुरी धाम में भगवान जगन्नाथ की बाहुड़ा यात्रा पहली जुलाई को

भगवान जगन्नाथ की बाहुड़ा यात्रा :2020 :कोरोना संक्रमण काल में नई सदी की एक करिश्माई आध्यात्मिक यात्रा

वैश्विक महामारी कोरोना के संक्रमण काल में जिस प्रकार भगवान जगन्नाथ की विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा नई सदी की एक करिश्माई आध्यात्मिक रथयात्रा रही । जिसप्रकार मात्र एक दिन के भीतर ही महाप्रभु अपनी इच्छानुसार अपनी विश्व प्रसिद्ध रथ यात्रा कर अपने बड़े भाई बलभद्रजी तथा छोटी बहन सुभद्राजी के साथ अपने जन्मवेदी;गुण्डीचामंदिर आये;वह सबकुछ किसी दैवी करिश्मा से किसी भी तरह से कम नहीं था। रथयात्रा से जुड़े जहां सबकुछ प्रतिकूल था देखते ही देखते अनुकूल बन गया। पुरी गोवर्द्धन पीठ के 145वें पीठाधीश्वर जगतगुरु शंकराचार्य श्री निश्चलानन्द सरस्वती जी महाराज,जगन्नाथ भगवान के प्रथम सेवक पुरी के गजपति महाराजा श्री दिव्य सिंहदेव जी महाराजा,श्रीमंदिर प्रशासन पुरी,ओडिशा प्रदेश सरकार,भारत की केन्द्र सरकार,भारत के राष्ट्रपति,उपराष्ट्रपति,प्रधानमंत्री,अनेक वरिष्ठ केन्द्रीय मंत्रिगण,भारत का उच्चतम न्यायालय;सभी का रथयात्रा आयोजन से जुड़े विचार और दृष्टिकोण देखते ही देखते सकारात्मक हो गया। सभी ने वैश्विक महामारी कोरोना के संक्रमण को ध्यान में रखकर केवल श्रीजगन्नाथ मंदिर के सेवायतों तथा ओडिशा पुलिस प्रशासन के सहयोग से जगन्नाथजी विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा को बड़े ही सुंदर तथा सुव्यवस्थित ढंग से अनुष्ठित करने का अपना–अपना सकारात्मक विचार दिया। रथयात्रा के आयोजन को सभी ने भगवान जगन्नाथ की ओर से नई सदी की एक करिश्माई आध्यात्मिक यात्रा बताया।

ठीक उसी प्रकार उनकी श्रीमंदिर वापसी यात्रा जिसे बाहुड़ा यात्रा के नाम से जाना जाता है उसके लिए सभी प्रकार की तैयारियां पूरी कर लीं गई हैं। श्रीमंदिर के जनसंपर्क अधिकारी श्री लक्ष्मीधर पूजा पण्डा के अनुसार कोरोना संक्रमण से पूर्व वसंतपंचमी के दिन 30जनवरी से नये रथों के निर्माण के लिए पवित्र काष्ठसंग्रह का काम आरंभ हो चुका था। काष्ठ खण्डों को बैलगाड़ी के द्वारा पुरी बड़दाण्ड पर श्रीनाहर;पुरी के गजपति महाराजा के राजमहल के सामने रथखाला में रख दिया गया था। अक्षयतृतीया अर्थात् 26अप्रैल को इस वर्ष चंदनयात्रा एहतियात के तौर पर श्रीमंदिर के जलक्रीड़ा मण्डप में 21 दिनों तक अनुष्ठित हुई।

देवस्नानपूर्णिमा 05जून को बिना भक्तों के संपन्न हुई लेकिन उसका अवलोकन इस वर्ष करोड़ों जगन्नाथ भक्त टेलीविजन और दूरदर्शन के माध्यम से अपने –अपने घरों से किये। भगवान जगन्नाथ का नेत्रोत्सव 20जून को संपन्न हुआ। 23जून को भगवान जगन्नाथ की विश्व प्रसि़द्ध रथयात्रा अनुष्ठित हुई जिसमें श्रीमंदिर के समस्त सेवायत आदि तथा ओडिशा पुलिस प्रशासन के सहयोगियों ने योगदान किया तथा जिसे कोरोना संक्रमण के चलते एहतियात के रुप में सभी जगन्नाथ भक्त अपने–अपने घरों में टेलीविजन तथा दूरदर्शन के माध्यम से देखे। नई सदी की इस वर्ष की हेरापंचमी 27जून को अनुष्ठित हुई। भगवान जगन्नाथ की बाहुड़ा यात्रा :पहली जुलाई को है। कुल सात दिनों तक गुण्डीचा मंदिर में विश्राम करने के उपरांत भगवान जगन्नाथ अब अपने श्रीमंदिर में पधारेंगे। पहली जुलाई को बाहुड़ा यात्रा पर निकलने से पूर्व गुण्डीचा मंदिर में उनकी मंगल आरती होगी,मयलम,तड़पलागी,रोसड़ा भोग,अवकाश, सूर्यपूजा,द्वारपालपूजा,शेषवेश आदि पूरे विधि–विधान के साथ संपन्न होगा। चतुर्धा देव विग्रहों को गोपालवल्लभ भोग/खिचड़ी भोग निवेदित होगा। सकल धूप,सेनापटा लागी होगा। उसके उपरांत चतुर्धा देवविग्रहों की पहण्डी होगी। भगवान जगन्नाथ के प्रथम सेवक पुरी के गजपति महाराजा श्री दिव्य सिंहदेवजी महाराजा अपने राजमहल श्रीनाहर से पालकी में सवार होकर आएंगे तथा छेरापहंरा का पवित्र दायित्व निभाएंगे। तीनों रथों से जुड़ा नारियल सीढियों को हटा दिया जाएगा। तीनों रथों तालध्वज,देवदलन तथा नंदीघोष रथ जो क्रमशः भगवान बलभद्रजी,देवी सुभाद्राजी तथा भगवान जगन्नाथ के रथ होते हैं उनको उनके सुनिश्चित घोड़ों के साथ जोड़ दिया जाएगा तथा हरिबोल एवं जय जगन्नाथ के जयघोष से बाहुड़ा यात्रा आरंभ हो जाएगी। तीनों रथों को श्रीमंदिर के समस्त सेवायतगण तथा ओडिशा पुलिस के तैनात अधिकारी तथा सहयोगीगण आदि खींचकर श्रीमंदिर के सिंहद्वार के सामने लाएंगे जहां पर भगवान जगन्नाथ समेत चतुर्धा देव विग्रहों का आगामी दो जुलाई को सोना वेश होगा। श्रीमंदिर प्रशासन से प्राप्त जानकारी के अनुसार श्रीमंदिर के रत्नभण्डार में कुल 12,000 तोला/भरी के सोने के अनेक आभूषण तथा साथ में कीमती हीरे– जवाहरात आदि हैं उनसे चतुर्धा देव विग्रहों को नख से शिख तक स्वर्णाभूषणों से सुसज्जित किया जाएगा। डीडी के माध्यम से तथा अन्य ओडिया क्षेत्रीय टेलीविजन चैनलों के माध्यम से करोड़ों जगन्नाथ भक्तगण उसे देखेंगे

तथा भगवान जगन्नाथ की मानवीय लाला का आनन्द अपने–अपने घर से ही उठाएंगे। अधरपड़ा : 03जुलाई को अनुष्ठित होगा तथा महाप्रभु जगन्नाथ नई सदी के 2020 वर्ष में अपनी भार्या मातालक्ष्मी की अनुमति से नीलाद्रि विजय कर 04जुलाई को अपने रत्नवेदी पर पधारेंगे। उस दिन सरगुल्ला भोग लगता है।

सच कहा जाय तो जिस पुरी धाम जो अपने आपमें एक धर्म कानन है वहां पर विद्यापति,चैतन्य,जयदेव, रामानुजाचार्य,नानक,कबीर, तुलसी,जयदेव,सरलादास,जगन्नाथ दास,उपेन्द्र भंज,और भीमा भोई जैसे अनेक जगन्नाथ भक्तों ने आकर भगवान जगन्नाथ की अटूट भक्ति अपनाई है वहां की रथयात्रा तथा बाहुड़ा यात्रा अपने आपमें भक्ति,धर्म और दर्शन की त्रिवेणी है। सांस्कृतिक माहोत्सव है। सगुण–निर्गुण,साकार–निराकर,व्यक्त–अव्यक्त तथा लौकिक–अलौकिक का समन्वय है। जिस रथारुढ़ भगवान जगन्नाथ को संत बलराम दास ने अपने नेत्रों में त्रिमूर्ति के दर्शन किये और अपनी अद्वितीय लेखनी के द्वारा यह बताया कि प्रत्येक वैष्णव जन के नेत्र का श्वेत भाग बलभद्रजी हैं,श्याम भाग सुभद्राजी हैं तथा नेत्र की पुतली स्वयं में भगवान जगन्नाथजी हैं। ऐसे में भगवान जगन्नाथ की 2020 की बाहुड़ा यात्रा का टेलीविजन से अपने–अपने घरों से अवलोकन कर पूरा विश्व शांति,सद्भाव,प्रेम,भक्त,शांति,मैत्री तथा एकता का पावन संदेश प्राप्त करेगा।

जय जगन्नाथ!

प्रस्तृति अशोक पाण्डेय
लेखक राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित हिन्दी शिक्षक तथा केन्द्रीय विद्यालय का अवकाशप्राप्त प्राचार्य रहा है जिसने 2020 मिलाकर विगत कुल लगभग 30 वर्षों से भगवान जगन्नाथ की विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा का दूरदर्शन के सीधे प्रसारण में हिन्दी में अपनी कमेण्टरी प्रस्तुत की है।